© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 12 | October – December 2017

हिन्दी साहित्य लेखन में इतिहास का महत्व

सुषमा, असिसटेन्ट प्रोफेसर, विभाग – हिन्दी, यूनिवर्सिटी कालेज, जैतो

परिचय :–

हिन्दी साहित्य का निर्माण तो बहुत समय से चला आ रहा था किन्तु उसके वैज्ञानिक अध्ययन और सामग्री के संकलन प्रयास आरम्भ हुए अभी लगभग सौ वर्ष हुए है। प्राचीन काल के कवियों ने अपने सम्बन्ध में कुछ कहा है अथवा अपने परवर्ती व समकालीन कवियों का उल्लेख किया है। किन्तु यह कार्य एक तो स्फुट रूप से हुआ दुसरे उनसें साहित्य की प्रगति और प्रवृतियों का परिचय प्राप्त नहीं होता। अतः साहित्य का इतिहास लिखते समय उन से सहायता अवश्य मिलती हैं। किन्तु स्वंय अपने में वे इतिहास नहीं है। इतिहास लिखने का प्रयास तो ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी के लगभग मध्यम से प्रारम्भ होता है। उस समय भी कवि और कवि कृतियों की सूचना ही अधिक मिलती है। साहित्य का इतिहास अपने व्यापक रूप में प्रत्येक परिवर्तन किया का विवरण है। उसी के अध्ययन करने का नाम साहित्य के इतिहास का वैज्ञानिक अध्ययन है।

साहित्य का अर्थ :–

साहित्य समाज का दर्पण होता है अर्थात साहित्य में समाज की सभी अच्छाईयां , बुराईयां प्रतिबिम्बित होती है। साहित्य के बारे में यह उक्ति भी प्रसिद्ध है– ''स : हितेन स साहित्य अर्थात जिसमें सबका भला हो वह साहित्य कहलाता है। समाज और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण समाज में परिवर्तन होने के साथ–साथ साहित्य के इतिहास में परिवर्तन होते रहते है। जिस काल या युग में समाज का जो रूप होता है, साहित्य का उसी रूप के साथ सांमजस्य होता है।

हिन्दी साहित्य में इतिहास :–

इतिहास के विषय में उत्तर देना कोई सरल कार्य नहीं है। क्योंकि इसे एक परिभाषा में नहीं बाधा जा सकता है। इतिहास में अनेकानेक धाराएं प्रवाहमान होती है और यह अनेकमुखी तथा गतिशील होती है। घटित घटनाएँ काल–क्रम तथा सन् सम्वत में क्रियान्वित होती हुई इतिहास का रूप धारण कर लेती है तथा बीते हुए युग का इतिहास बन जाती है। साहित्य का इतिहास अपने व्यापक रूप में प्रत्येक परिवर्तन क्रिया का उदाहरण है। विश्व में कोई चीज स्थिर परिवर्तनशील नहीं है। अतीत के किसी भी तथ्य,तत्व एवं प्रवृत्ति के वर्णन, विवरण, विवेचन व विश्लेषण को जोकि काल विशेष की दृष्टि से किया गया हो इतिहास कहा जा सकता है। इतिहास का शाब्दिक अर्थ होता है– ऐसा ही था– या ऐसा ही हुआ। इससे दो बातों को स्पष्ट किया जा सकता है। पहली बात यह है कि उसका सम्बन्ध केवल अतीत की घटनाओं से होता है और दूसरी बात यह है कि इसके अन्तर्गत केवल वास्तविक घटनाओं का ही समावेश होता रहता है। इससे यह अर्थ निकाला जा सकता है कि इतिहास अतीत में घटी हुई घटनाओं परिस्थितियों एंव

प्रवृतियों के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करता है इतिहास का सम्बन्ध इतिहासकार की तत्सम्बन्धी व्यवस्था से भसी है। इतिहास व्याख्या के अभाव में निर्जीव रहता है।

इतिहास सस्कृंत भाषा के तीन शब्दो से मिलकर बना है अर्थात ' इति ' ' ह ' और आस। ' इति ' का अर्थ होता है ऐसा ही , ' ह ' का अर्थ होता है निश्चित रूप से और आस का अर्थ होता है ' था '। इस प्रकार इतिहास का शाब्दिक अर्थ हुआ ' जो निश्चित रूप से ऐसा ही था। ' अर्थात जो घटनाएँ भूतकाल में घटित हुई है और जो निश्चित तथा सत्य है। वहीं इतिहास की सामग्री है औश्र उन्हीं के क्रमबद्ध तथा विवेचनात्मक वर्णन को इतिहास कहा जा सकता है।

ई : एवं कार के अनुसार , '' इतिहास इतिहासकार तथा अन्यान्य क्रिया की सतत् प्रक्रिया है एवं वर्तमान बात अतीत का एक अविच्छिन्न सवांद है। '' इस परिभाषा में सिद्धान्त और व्यवहार दोनों का हीं समावेश है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि इतिहास चाहे आपने परम रूम में देशकाल में घटित तथा घट रहे विकासशील मानव–जीवन की समग्रता को समझने का प्रयास है। इतिहास के लेखन द्वारा ही इतिहास अपना साकार एवं सजीव रूप धारण करता है। साहित्य की प्रगति न तो एक रेखीय है और न ही चक्रवत , क्योंकि इसकी निरन्तरता में उतार–चढ़ाव आता ही रहता है। साहित्योतिहास की गति सर्पाकार है। इतिहास कोई बिल्कुल भी वस्तु नहीं है। इतिहास से मनुष्य का सम्बन्ध अति पुरातन है। हमारा सारा सस्कार , व्यवहार , सस्कृति और नीति अतीत से चली आ रही एक अनवरत धारा है। उसे हम उसकी अखण्डता में ही देख सकते है। बिना अतीत को समझे उसके वर्तमान स्वरूम को नहीं समझ सकते है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वरन वह जितना से समाज से सम्बन्ध है उतना ही इतिहास से भी। उसकी समाजिकता के निर्माण में इतिहास का विशेष योगदान है।

मनुष्य एक सर्जृनशील प्राणी है। वह एक और वो इतिहास से प्रभावित होता है। तो दूसरी और वह इतिहास का निर्माण उसकी नई व्याख्या, उसकी दिशाओं में परिर्वतन लाता है। इतिहास के सम्बन्ध में यह भ्रम बिल्कुल नही पालना चाहिए कि इतिहास केवल खण्डीत पत्थरों और खण्डीत जीव तक ही सीमित है। वास्तव में हमें नई व्याख्या, नई प्ररेणा और नई दृष्टि से आगत के आलोकपूर्ण पथ को प्रशस्त करता है। काव्य मीमांक्षा में राजशेखर ने लिखा है कि इतिहास और पुरातत्व विवेक के काजल से निखरी हुई आँखें हैं। जिनसे मैधावी व्यक्ति सूक्ष्म वस्तुओ को भी देख लेता है

इतिहास ऐतिहासिक घटनाओं और वृतान्तों का मात्र लेखा–जोखा ही प्रस्तुत नही करता है वरन् वह इतिहास की सृर्जना भी करता है। एक सफल इतिहासकार उन्ही घटनाओं, वृतान्तों और व्यक्तियों को अपने अध्ययन का विषय बनाता है। जिसने अतीत के पन्नों पर अपना अमिट हस्ताक्षर किया है। इस प्रकार एक इतिहासकार अपने ऐतिहासिक बोध को दो प्रकार से व्यक्त करता है।

1 तथ्यों की जांच–पड़ताल और
2 स्त्रोतों से तथ्यों का चयन

तथ्यों के चयन में इतिहासकार से पूरी तटस्थता की उपेक्षा की जाती है। इतिहासकार जितना तटस्थ होगा उसकी इतिहास उतना ही प्रमाणिक और विश्वसनीय होगा। अतः देश और समाज को अतीत और वर्तमान को इतिहासकार से पूरी ईमानदारी की कामना होती है। इतिहासकार की यही ईमानदारी उसकी यही तटस्थता और निष्पक्षता उसके सच्चे इतिहास बोध का निर्माण करती है। और इतिहासकार का इतिहास–बोध ही उससे प्रमाणिक इतिहास का निर्माण करवाता है।

इसी तरह राजनीतिक इतिहास किसी भी देश के अतीतकालीन राजनीतति का चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करता है। इस प्रकार वह हमे। देश विशेष के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिदृश्य के साथ विशिष्ट घटनाओं और विशिष्ट व्यक्तियों को परिचित करवाता है। इसके विपरीत साहित्यिक इतिहास मात्र साहित्य के प्रारम्भ और साहित्य के विकास की दिशाओं से सम्बन्ध होता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार " जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्रवृति का संचित प्रतिबिम्ब होता है। तब यह निश्चित है कि जनता की चित्रवृत्ति के परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन हो जाता है। आदि से अन्त तक इन्ही चित्रवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य परम्परा के साथ उनका सामजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनैतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक, तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।

राजनीतिक इतिहासकार और साहित्यिक इतिहासकार दोनों के लिए उस देश के इतिहास को जानना जरूरी होता हैं । यह बहुत बड़ी वास्तविकता है कि इतिहास के ज्ञान के बिना साहित्येतिहास लेखन बड़ा दुरूह ही नहीं वरन् असभंव हैं। राजनीतिक इतिहासकार के लिए साहित्य का ज्ञान अनिवार्य होता हैं। समाज, राजनीतिक इतिहासकार के लिए साहित्य का ज्ञान अनिवार्य होता है। समाज, राजनीति, धर्म, दर्शन, लोक –मान्यताएँ और लोक विश्वास साहित्य का आधार बनती हैं। इन आधारों को ध्यान में रखकर जो कृतियों विशेष देशकाल में निर्मित होती है। उन का अध्ययन अनुशीलन और मूल्यांकन साहित्येतिहासकार का कर्तव्य और दायित्व होता हैं। अतः साहित्येतिहासकार के लिए आवश्यक है ि कवह भाँति–भाँति की विधाओं की पक्षों का भी ज्ञान हो तभी वह साहित्य के विश्वसनीय और प्रमाणिक इतिहास की रचना कर सकता है।

साहित्य का इतिहास–लेखक ज्ञान–विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में लिखने वाले इतिहासकारों की भान्ति ही एक इतिहासकार होता हैं। लेखक साहित्य–कृतियों के माध्यम से उपलब्ध मानव जीवन के इतिहास को अपना मूलभूत लक्ष्य बनाता है। यही साहित्य के इतिहास में अन्तर का विषय है। दूसरी और अन्य क्षेत्रों के इतिहासकार अपनी विशिष्ट विषय–परिधि, चित्रकला, मूर्तिकला, वाणिज्य अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, बनाते है। अन्य इतिहासकारों की भान्ति ही साहित्य का इतिहास लेखक पहले इतिहासकार है। बाद में साहित्य का आलोचक भाषाविद अथवा पाठालोचक है। 'इतिहास' का व्यापक अर्थ भी समझना जरूरी है। व्यापक अर्थ में इतिहास वह सामाजिक शास्त्र है जो हमें भूतकाल के लोगों के राजनीतिक, समाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सास्कृतिक जीवन का परिचय कराता है। इसे विभिन्न भागों में विभाजित भी किया जा सकता है। जैसे राजनीतिक इतिहास, सांस्कृतिक इतिहास , आर्थिक इतिहास आदि। जब हम किसी देश के राजनीतिक इतिहास का

अध्ययन करते है, तब हमें इस बात का पता लग जाता है कि वहाँ पर किन–2 राजवंशो का उत्थान तथा पतन हुआ है। उनके उत्थान तथा पतन के क्या कारण थे उन की शासन व्यवस्था किस प्रकार की भी और उसके क्या अध्ययन करते है , तब हमें इस बात का ज्ञान होता है कि उस समाज का सगंठन किस प्रकार का था, उसके मूलाधार क्या थे। वहाँ के लोंगों के आचार व्यवहार, उन के रीति–रिवाज, उन का खान–पान, उन की वेशभूषा तथा उन का रहन–सहन कैसा था, उनके मनोरजंन के साधन क्या थे, उन से वर्ग तथा श्रेणी भेद नहीं था और यदि था, तो प्रत्येक वर्ग की क्या दशा थी, उस समाज में कौन सी कृरीतियां प्रचलित थी, उन का प्रचलन किस प्रकार हुआ, उनमें कब और किस प्रकार विकास हुए उन का क्या परिणाम हुआ और उन कृरीतियों को दूर करने के लिए कौन से यथार्थ प्रयास किए गए। जब हम किसी देश के आर्थिक विकास का अध्ययन करते है, तब हमें इस बात की जानकारी मिल जाती है कि वहां के लोगों की जीविका के साधन कौन–2 से थे, उन के उद्योग धन्धे कौन–2 से ये, उन का आर्थिक सगंठन किस प्रकार का था, मुद्रा की व्यवस्था क्या थी और उन का जीवन सम्पन्न था अथवा विपन्न अर्थात उनका जीवन स्तर ऊंचा था या नीचा ओर आर्थिक विकास में वे कितना आगे थे। जब हम किसी देश के धार्मिक इतिहास का अध्ययन करते है तब हम इस बात से परिचित हो जाते है कि वहां के लोग आस्तिक थे या नास्तिक ओर यदि वे आस्तिक थे तो किन देवी–देवताओं में उनका विश्वास था और उन की किस प्रकार की पूजा–अर्चना किया करते थे अपने धर्म की रक्षा तथा प्रचार के लिए उन्होनें कौन–2 से कार्य किए , उस धर्म के प्रर्वतक प्रचारक तथा सुधारक कौन थे और उस धर्म के मूल तत्व क्या थे। जब हम किसी देश के सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन करते है, तब हमें इस बात की जानकारी मिलती है कि वहां की शिक्षा की क्या व्यवस्था थी, उस का स्वरूप तथा उनकी विधि कैसी थी, पाठ्यक्रम क्या था, अर्थात किन विषयों की शिक्षा के कौन–2 से प्रमुख केन्द्र थे, साहित्य तथा कला में वहां के लोगों की रूचि थी, किस प्रकार के साहित्य और किन–2 कलाओं का उन लोगों ने सजृन किया, उन के विकास में उन्हें कितनी सफलता प्राप्त हुई और उस देश में किन–किन महान साहित्याकारों तथा कलाकारों का जन्म हुआ, जिन की कृतियों से उस देश का गौरव बढ़ा। इस प्रकार व्यापक अर्थ में इतिहास मानव के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन का क्रमबद्ध वैज्ञानिक विवेचना करता है, अतएव हम सक्षेंप में कह सकते है कि इतिहास का स्वयं अपना इतिहास साहित्य के इतिहास के साथ जुड़ा होता है। अतः जब तब भाषा और उस के इतिहास का ज्ञान न हो जाए साहित्य का इतिहास–लेखन अपना ठोस आधार बना नहीं सकता है। साहित्य का इतिहास लेखक भी मनुष्य का ही इतिहास प्रस्तुत करता है पर वह मनुष्य को अपने लेखन का केन्द्र बनाता है जो साहित्य के द्वारा समाज के सामने अपना रूप प्रकट करता है और यदि इतिहासकार साहित्येतर विषयों की और मुड़ता है तो मात्र इसलिये कि वह उस मनुष्य को उसकी पूर्णता में समझ सके जिस के जटिल एवं संशिलिष्ट रूप को मात्र साहित्यक रचनाओं द्वारा समझना प्रायः उस असम्भव–सा ही प्रतीत होता है ठीक उसी प्रकार इतिहास साहित्य भी इतिहास से प्रभावित होता रहता है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल से ले कर आज तक हम देख रहे हैं कि हिन्दी साहित्य ने इतिहास की अनेक घटनाओं को अपने में समा लिया है और उन्हें साहित्यक कृतियों के रूप में देश और समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में प्रायः सामाजिक तत्वों की

उपेक्षा चिरन्तन मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता रहा है। अतः यहां के प्राचीन इतिहासकारों ने अतीत की व्यवस्था में से भी उन प्रवृतियों का अनुसंधान करते रहे जो मनुष्य को स्थायी एवं अमर बनाती है। आदिकाल से लेकर आज तक ऐसे अनेक ग्रन्थों की रचना की गई है। जिनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध इतिहास से रहा है। भारतवर्ष के साहित्य पर उस के इतिहास का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। आर्यों के इतिहास के विषय में उन के ग्रंथ, वेद, वेदान्त, सूत्र, स्मृतियां, दर्शन ग्रंथ, महाकाव्य और पुराण हमें जानकारी देते है।

इतिहास के प्रथम व्याख्यातों यूनानी विद्वान ने हिरादेतस ने इसे खोज गवेषणा या अनुसधांन के अर्थ मे ग्रहण करते हुए इसके चार लक्षण निर्धारित किये थे।

इतिहास वैज्ञानिक विद्या है अतः इसकी पद्धति आलोचनात्मक होती है।
यह मानव जाति से सम्बन्ध होने के मानवीय विधा है।
यह तर्क सगंत विद्या है। अतः इसमे तथ्य और निष्कर्ष प्रमाण पर आधारित होते हैं।
यह अतीत के आलोक में भविष्य पर प्रकाश डालता है अतः यह शिक्षाप्रद विद्या है।

आधुनिक युग में विभिन्न विद्वानों ने इसके सम्बन्ध में नए दृष्टिकोण से विचार किया है हीगल के मतानुसार विश्व इतिहास की प्रक्रिया का मूल लक्ष्य मानव–चेतना का विकास है जो द्वन्द्वात्मक पद्धति पर आधारित है। उन्नीसवीं शताब्दी में डारवीन ने अपने विकासवादी सिद्धान्त की स्थापना के द्वारा इतिहास को एक नई दृष्टि शक्ति व गति प्रदान की।

निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि इतिहास ने इस देश और समाज को जो कुछ भी दिया है उसे और अधिक परिष्कृत कर के हिन्दी साहित्य ने देश और समाज के सामने सजा कर प्रस्तुत कर दिया। हिन्दी साहित्य के सम्पूर्ण इतिहास की विभिन्न विधाएँ इन ऐतिहासिक धटनाओं से ही भरी पड़ी है।

सन्दर्भ :–

1. आचार्य रामचन्द्रषुक्ल :– ''हिन्दी–साहित्य का इतिहास'', इक्तीसवां संस्करण, श्री नारायण नागरी मुद्रण, नागरीप्रचारिणी सभा वाराणषी (काषी)
2. राजनाथ षर्मा :– ''हिन्दी–साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
3. डॉ. नगेन्द्र :– ''हिन्दी–साहित्य का इतिहास'' (संपादक), नेषनल पब्लिषिंग हाउस, 2/35 अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली – 110002
4. डॉ. रामगोपाल षर्मा 'दिनेष' (1995) :– ''हिन्दी–साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास'', प्रथम संस्करण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, ए–26/2, विद्यालय मार्ग, तिलक नगर, जयपुर

Universal Research Reports